इकाई 2 अनुवाद का महत्व और प्रासंगिकता

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 अनुवाद की आवश्यकता

2.3 अनुवादक की स्थिति

2.4 अनुवाद का बदलता स्वरूप

2.5 राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में अनुवाद का महत्व

2.6 सामासिक संस्कृति के विकास में अनुवाद का महत्व

2.7 भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व

2.8 विश्वसाहित्य के अध्ययन–अध्यापन में अनुवाद का महत्व

2.9 तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व

2.10 व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

2.11 पर्यटन के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

2.12 प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

2.13 जनसंचार माध्यमों में अनुवाद का महत्व

2.14 शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

2.15 सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद

2.16 सारांश

2.17 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.18 उपयोगी पुस्तके

2.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बता सकेंगे कि अनुवाद की जरूरत क्यों पड़ती हे;
- अनुवादक की सामाजिक स्थिति का उल्लेख कर सकेंगे; और
- विभिन्न जीवन संदर्भों और क्षेत्रों में अनुवाद का महत्व और प्रासंगिकता समझ सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाई में आप पढ़ चुके हैं कि अनुवाद क्या है, उसे कैसे परिभाषित किया जा सकता है तथा उसकी परंपरा क्या और कैसी रही है। प्रस्तुत इकाई अनुवाद के महत्व एवं प्रासंगिकता के बारे में है। आप पढ़ चुके हैं कि अनुवाद बहुत प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। अनुवाद की परंपरा जानने के बाद आपको उसके महत्व के विषय में जानना आवश्यक है। वैसे तो जो चीज इतने समय

से होती चली आ रही है उसका महत्व स्वयंसिद्ध ही है। लेकिन वह महत्व किस रूप में और कैसा है, यह जानना अपने आप में महत्वपूर्ण है। इसके अलावा जो चीज पुराने समय से चली आ रही है उसकी वर्तमान समय में या भविष्य में प्रासंगिकता जानना भी जरूरी है। प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद की प्रासंगिकता की भी चर्चा करेंगे। यह प्रासंगिकता वास्तव में अनुवाद के विभिन्न संदर्भों और क्षेत्रों के महत्व में ही निहित हैं।

2.2 अनुवाद की आवश्यकता

किसी कार्य के महत्व का मूल्यांकन करते समय यदि पहले इस बात पर विचार कर लिया जाए कि वह कार्य क्यों किया जाता हे तो उस कार्य के महत्व के कई पहलू स्वयं ही सामने उभर कर आ सकते हैं। इस दृष्टि से यदि हम इस बात पर विचार करते हैं कि अनुवाद की आवश्यकता क्या है या अनुवाद क्यों किया जाता है तो अनुवाद के महत्व संबंधी कई पहलू स्वयं सामने आ जाएँगे। मनुष्य के भाषा ज्ञान की सीमा है। वह कितनी भाषाएँ सीख सकता है – दो, चार, छह,, आठ, दस? लेकिन वह भाषा ज्ञान की सीमा को अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों की सीमा नहीं बनाना चाहता। वह उन लोगों से संपर्क में आता है जिनकी भाषा नहीं जानता। उनके साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, व्यापार एवं वाणिज्यिक संबंध स्थापित करता है। इन कार्यों में वह दुभाषिए और अनुवादक की सहायता लेता है। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में वह अपनी जानकारी सीमित नहीं रखता चाहता। देश–विदेश में हुए अनुसंधान एवं विकास की निरंतर जानकारी पाना चाहता है। दूसरी भाषाओं की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक धरोहर की विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन करना चाहता है और यह सब अनुवाद के माध्यम से ही संभव होता है।

दूसरी ओर, वह एक तरह की सर्जनात्मक प्रेरणा से भी अनुवाद की ओर प्रेरित होता है। अन्य भाषाओं में जो कुछ नया और विशिष्ट उसे दिखाई देता है उसे अपनी भाषा के लोगों तक पहुँचाने का माध्यम बनने में उसे एक विशिष्ट प्रकार का सर्जनात्मक सुख प्राप्त होता है जो किसी हद तक मौलिक सृजन के सुख से कम नहीं होता। इस सृजनात्मक प्रेरणा के कारण ही साहित्यिक कृतियों के अनुवाद प्राचीन काल से होते चले आ रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। जो कृति जितनी अधिक श्रेष्ठ होती है उतनी ही अधिक अनुवाद की प्रेरणा देती है। विभिन्न भाषाओं के लोग उसका अनुवाद करते हैं। इतना ही नहीं एक ही भाषा में उस कृति के अनेक अनुवाद देखने को मिलते हैं। कहना चाहिए हर युग में उसका अनुवाद होता रहता है। कालिदास, शेक्सपियर, वाल्मीकि आदि की रचनाएँ और उनके अनुवाद इसका उदाहरण है।

विज्ञान के विकास के साथ–साथ सूचना का महत्व बढ़ा है। विज्ञान के क्षेत्र में खोजों की जानकारी वैज्ञानिक तुरंत पाना चाहते हैं। जिस भाषा में वह उपलब्ध है उसे तुरंत अपनी भाषा में पाने के लिए उन्हें अनुवादकों की जरूरत पड़ती है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के साथ आज दुनिया भर के लोगों का आपसी संपर्क बढ़ा है। ज्ञान के क्षेत्र के अतिरिक्त व्यापार, उद्योग, पर्यटन आदि के क्षेत्र में दुनिया सिमट कर काफी छोटी हो गई है। भूमंडलीकरण (Globalization) के जमाने में जब मनुष्य एक दूसरे की आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति में ज्यादा और निकट का साक्षीदार हुआ है तब अनुवाद की जरूरत और ज्यादा बढ़ गई है। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रसार है और इन कंपनियों के माल के बाजार दुनिया भर में फैले हैं। इन बाजारों में माल की खपत के लिए अनुवाद अपने ढंग से जरूरी हो गया है। कंपनियों के उत्पाद भाषा की सीमाओं को लाँघते हुए सब जगह पहुँच रहे हैं।

इसलिए आज के युग को अनुवाद का युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। सोच और व्यवहार के हर स्तर पर हम अनुवाद पर आश्रित हैं, अनुवाद के आग्रही हैं। शायद ही जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र हो, जिसमें अनुवाद की उपादेयता प्रमाणित न की जा सके। अपरिहार्य तौर पर अनुवाद एक व्यापक और प्रासंगिक कार्यहै। इसलिए यह सर्वथा स्वाभाविक ही है कि नए संसाधनों के विकास और व्यापकतर मानवीय संपर्कों के संदर्भ में अनुवाद के महत्व, प्रासंगिकता और भविष्य का अनुशीलन किया जाए। संसार भर में प्रयुक्त पाँच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सर्जनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम बन गया है।

2.3 अनुवादक की स्थिति

अनुवाद के महत्व को देखते हुए यह प्रश्न उठता है कि क्या अनुवाद कार्य को मौलिक सृजन के समकक्ष महत्व मिल सकता है। इस प्रश्न को लेकर दो तरह केमत रहे हैं जहाँ एक बड़ा वर्ग अनुवाद को मानव जीवन की अनिवार्यता मानते हुए उसे अपेक्षित महत्व देता रहा है वहीं दूसरी ओर ऐसा वर्ग रहा है जो अनुवाद को मूल रचना के प्रति अनास्थावादी और भ्रामक घोषित करते हुए यह सिद्ध करता रहा है कि अनुवाद चूँकि मूल लेखन की बराबरी नहीं कर सकता इसलिए यह दोयम दर्जे का काम है। इस वर्ग के लोग मानते रहे हैं कि मौलिक लेखन के लिए प्रथम श्रेणी की प्रतिभा अपेक्षित है जबकि अनुवाद द्वितीय श्रेणी की प्रतिभा के लोग भी कर सकते हैं। वे अनुवाद को एक बोतल में भरे आसव को दूसरी बोतल में पलटने से बड़ा काम नहीं मानते। लेकिन इस मत को व्यापक स्तर पर स्वीकार नहीं किया गया और यह माना गया कि अनुवाद कार्य के लिए भी भौतिक सर्जन जैसी सृजनक्षमता और कल्पनाशीलता अपेक्षित है। इसके बिना अच्छा अनुवाद संभव ही नहीं। अनुवादक को चूँकि दूसरे के भावों और विचारों में पैठ कर उनका सार ग्रहण करना होता है इसलिए उसका कार्य ज्यादा जटिल होता है। अब से कुछ समय पहले अनुवाद कार्य और इससे जुड़े लोगों को दोयम दर्जे का स्थान प्राप्त था, लेकिन आज अनुवाद की बहुआयामी उपादेयता ने इस संदर्भ में सारा दृष्टिकोण ही बदल दिया है। अनुवाद समकालीन जीवन की अनिवार्यता है, युगानुरूप परिदृश्यों में बेहद उपयोगी एवं सघन संभावनापूर्ण है।

संस्कृत में अनुवाद शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरू की बात के दुहराए जाने, पुनः कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया गया है। लेकिन आज अनुवाद शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के संदर्भ में किया जाता है। वास्तव में अनुवाद भाषा के इंद्रधनुषी रूप की पहचान का समर्थन मार्ग है। अनुवाद की अनिवार्यता को किसी भाषा की मौलिक सृजन शक्ति की समृद्धि का प्रश्न उठा कर टाला नहीं जा सकता और न ही अनुवाद की बहुआयामी उपयोगिता से इनकार किया जा सकता है। अनुवाद को परिभाषित करने की अनेक कोशिशें हुई हैं और हर कोशिश में यही लक्ष्य किया गया है कि अनुवाद का मूल उद्देश्य स्रोत भाषा की विचार–सामग्री को अपनी भाषा में यथासंभव मूल रूप में उपस्थित करना है। अनुवाद की परिकल्पना एक ऐसे संयंत्र के रूप में की गई है, जिससे होकर स्रोत भाषा की सामग्री लक्ष्य भाषा में रूपांतरित होती है। इसलिए अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का समान जानकार हो। उभय भाषा–ज्ञान के समानांतर अनुवादक को

विषय का ज्ञाता भी होना चाहिए। अर्थात् विषय की अंतरंग पैठ के बिना अनुवादक स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में सही अनुवाद नहीं कर सकता। सच तो यह है कि अनुवाद कार्य के तीव्र और व्यापक उपयोग ने इस क्षेत्र की सावधानी को अधिकाधिक पैना बनाया है। जीवन और व्यवहार के हर नए–पुराने क्षेत्र में अनुवाद के महत्व ने इसे व्यापक विस्तार दिया है। आने वाले दिनों में अनुवाद और अधिक सूचनात्मक एवं लक्ष्य भाषा केंद्रित होंगे।

अनुवाद की प्रासंगिकता और विलक्षणताओं के आलोक में संसार भर की भाषाओं में अनुवाद की कई शैलियाँ और प्रविधियाँ अपनाई गई हैं। यदि अनुवादक सावधानीपूर्वक शब्द और अर्थ की आत्मा का स्पर्श करते हुए स्रोत भाषा की प्रकृति के अनुरूप लक्ष्य भाषा में अनुवाद उपस्थित करें, तो यही आदर्श अनुवाद होगा। इसलिए श्रेष्ठ अनुवादक को ऐसा कुशल चिकित्सक कहा गया है जो शीशी में रखी दवा को अपनी सिरिंज के द्वारा रोगी के शरीर तक यथावत् पहुँचा देता है। विकास के इस दौर में अनुवाद की अपरिहार्यता का अनुभव इसी कारण तीव्रता से किया जा रहा है कि संसार के किसी भी देश, भाषा और व्यक्ति के लिए शेष विश्व की अनेक उपलब्धियों से जुड़ने के लिए अनुवाद से बेहतर कोई माध्यम नहीं है। भाषाओं के पारस्परिक आदान–प्रदान से मनुष्य के वैचारिक तथा अभिव्यंजनामूलक स्वरूप में परिवर्तन द्वारा अनुवाद ने अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। राष्ट्रीय एकता से लेकर अंतर्राष्ट्रीय संबंध तक अनेक सामाजिक सूत्रों का नियमन अनुवाद से संभव होता है। ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में संसार की प्रगति और उपलब्धियों की अद्यतन जानकारी के लिए भी मनुष्य अनुवाद पर निर्भर है। नए तकनीकी संसाधनों और अधुनातन अनुसांधनों से परिचित होने के लिए अनुवाद ही सर्वसुलभ माध्यम है।

2.4 अनुवाद का बदलता स्वरूप

इसी पाठ्यक्रम के खंड 4 में आप विभिन्न इकाइयों के माध्यम से अनुवाद के बदलते स्वरूप के विषय में विस्तार से अध्ययन करेंगे। 1970 के दशक के बाद से अनुवाद के क्षेत्र में आए महत्वपूर्ण बदलाव ने अनुवाद अध्ययन को एक नया आयाम प्रदान किया है। अनुवाद से अनुवाद अध्ययन तक की इस यात्रा में इस दिशा में हुए महत्वपूर्ण कामों का तथा वैश्विक परिदृश्य पर अनुवाद की बदलती परिस्थिति को सूक्ष्मता से समझा जा सकता है। अनुवाद अध्ययन में आए सांस्कृतिक मोड़ ने अनुवाद को केवल एक प्रयोजनमूलक विषय के सीमित दायरे से निकालकर उसे एक विस्तृत तथा बहुआयामी विषय के रूप में स्थापित किया है। खंड 4 में हम जानेंगे कि अनुवाद की बढ़ती मांग तथा अनुवाद का समाजशास्त्रीय अध्ययन किस प्रकार उसे केवल एक प्रक्रिया तक सीमित न रखकर उसे एक ज्ञानानुशासन के रूप में स्थापित करता है।

अनुवाद के महत्व और प्रासंगिकता की चर्चा करने के संदर्भ में इस पर विस्तार से अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। आज अनुवाद केवल दो भाषाओं और दो संस्कृतियों के बीच आवाजाही का माध्यम भर नहीं है अपितु अनुवाद अध्ययन के माध्यम से विभिन्न शोषित समाजों, जातियों, उपनिवेशवाद तथा हाशिये के विभिन्न वर्गों के इतिहास का आकलन किया जा रहा है। समाजशास्त्रीय अध्ययन में अनुवाद एक महत्वपूर्ण उपकरण बनकर उभर रहा है। अनुवाद को आज केवल एक निरपेक्ष क्रिया के रूप में नहीं देखा जा सकता अपितु विश्व के विभिन्न सत्ता विमर्शों की पड़ताल में अनुवाद के विकासक्रम को अंकित किया जा सकता है।

2.5 राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में अनुवाद का महत्व

एकता की अनिवार्य कड़ी के रूप में भाषा की भूमिका से भला कौन इनकार कर सकता है? भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा की यह भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि अनेकता के बीच एकता के मंत्रों का उच्चार भाषा के स्तर पर करने का संकल्प अनुवाद के सहयोग से ही पूरा हो सकता है। भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टियों से हमारा देश बहुकोणीय है। एक साथ कई धर्मों, कई संप्रदायों, कई जातियों, कई भाषाओं और कई आचार–व्यवहारों के समन्वय से बना है भारत का मानचित्र है। अनेक विचारों, परंपराओं और ज्ञान संपदा के उपकरणों को मिलाकर भारत की तस्वीर बनती है कि इन सबके सम्यक् परिज्ञान के बिना न तो भारतवर्ष के इतिहास और भूगोल की सही जानकारी मिल सकती है और न ही भारत की एकता की पहचान हो सकती है। इस कार्य में अनुवाद की उपादेयता सर्वाधिक उल्लेखनीय है। भारत की राष्ट्रीय पहचान के विविध तत्व कश्मीर से कन्याकुमारी तक इस देश के विभिन्न भाषा–भाषी लोगों के बीच बिखरे हुए हैं। मध्ययुग के भक्ति–आंदोलन से लेकर उन्नीसवीं–बीसवीं शताब्दी के स्वाधीनता संग्राम तक पारस्परिक संपर्क और संप्रेषण में अुनवाद ने अपनी विशिष्ट भूमिका का संवहन किया है। भारत की भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता के विभिन्न सूत्र इस देश के विशाल ज्ञान भंडार और चिंतन की सरणियों में बिखरे हुए हैं। देश भर में फैली भाषाओं, बोलियों और लिपियों का पार्थक्य अपरिचय के कई ऐसे विंध्याचलों को जन्म देता है, जिनसे राष्ट्रीय एकता कहीं–न–कहीं बाधित होती है। लेकिन, भारतीय साहित्य के अद्यतन इतिहास साक्षी है कि जिस प्रकार के स्वर हिंदी भाषी जनता की हृदयवीणा से निकलते रहे हैं, वैसे ही स्वर सारी भारतीय भाषाओं में भी गूँजते रहे हैं। अनुवाद के विस्तार ने अब यह स्पष्ट कर दिया है कि हजार वर्षों के लंबे इतिहास में भारतीय साहित्य की परंपरा एक ही दिशा में प्रवाहित होती रही है। अनुवाद के प्रयास न होते तो चिंतन और सर्जना के स्तर पर व्याप्त अभूतपूर्व राष्ट्रीय एकता के तथ्य उजागर नहीं होते।

अनुवाद के प्रयत्नों ने ही यह प्रमाणित किया है कि जब गोस्वामी तुलसीदास अपने *''रामचरितमानस''* में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व को साकार कर रहे थे, उसी तरह बंगाल में कृतिवास, उड़ीसा में बलराम दास, असमिया में शंकरदेव, मराठी में एकनाथ, तमिल में कम्बन, मलयालम में एषुत्तच्छन और नेपाली में भानुदत्त भी रामकाव्य रच रहे थे। सूरदास की कृष्ण भक्ति के साथ ही साथ तेलुगु में पोतन्ना, गुजराती में नरसी मेहता, बंगला में चंडीदास, मलयालम में नम्पूतिरि, कन्नड़ में कनकदास और उड़िया में जगन्नाथ दास भी कृष्णकाव्य के प्रणयन में व्यस्त थे। हिंदी में कबीर, पंजाबी में नानकदेव, तेलुगु में वेमना, मराठी में नामदेव और कश्मीरी में लल्लेश्वरी ने एक निर्गुण ईश्वर की उपासना का संदेश दिया है। अनुवाद के विस्तार ने ही यह सूचित किया है कि भारत में ब्रिटिश शासन के जमान के बाद जब पुनर्जागरण की लहर राष्ट्रीय परिदृश्य में आई, तब अकेले भारतेंदु हरिश्चंद्र ही आधुनिक युग के पुरोधा नहीं बने। तेलुगु में वीरेशलिंगम पंतुलु, मराठी में विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, गुजराती में नर्मद, उड़िया में फकीर मोहन सेनापति, असमिया में लक्ष्मीनाथ बेनबरूआ, मलयालम में केरल वर्मा आदि ने भी आधुनिकता की दिशा में ऐसे ही प्रयास किए। बाद में जिस तरह हिंदी में छायावादी कविताओं का युग आया, उसी तरह मलयालम और तेलुगु में भी स्वच्छंदतावादी भाव की कविता लिखी गई। अनुवादों ने बताया है कि निराला की विद्रोही कविताओं के समानांतर ही बंगला में

नजरुल इस्लाम और तमिल में सुब्रह्मण्यम भारती की राष्ट्रवादी कविताएँ रणभेरी बजा रही थी। जिस प्रकार बांग्ला में द्विजेंद्र लाल राय अपने ऐतिहासिक नाटक लिख रहे थे, उसी प्रकार जयशंकर प्रसाद हिंदी में नाट्यरचना में प्रवृत्त थे।

प्रेमचंद्र के हिंदी उपन्यासों और शरतचंद्र के बांग्ला उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के प्रति स्वीकृत समानधर्मिता का परिज्ञान अनुवाद ही देते हैं। अनुवाद की सुविधा के बिना लोग कैसे जान पाते कि सुमित्रानंदन पंत के काव्य और जी. शंकर कुरूप की मलयालम कविता में कहीं कोई तालमेल है अथवा हिंदी के शरद जोशी और गुजराती के विनोद भट्ट ने विसंगतियों का समान व्यंग्य शैली में निदर्शन किया है। निश्चय ही भारत की सभी भाषाओं में एक मूलभूत भावात्मक एकता विद्यमान रही है। एकता के इन तंतुओं को अधिकाधिक सुदृढ़ करने में अनुवाद की भूमिका अप्रतिम कही जा सकती है। जिस राष्ट्रीय एकीकरण की आवाज देश के विस्तृत मानचित्र पर गूँज रही है, उसके अपेक्षित पल्लवन में अनुवाद की सार्थकता असंदिग्ध है।

वास्तव में अनुवाद वह सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा भारत जैसे राष्ट्र की एकसूत्रता को सही दिशा मिलती है। अनुवाद की सुविधा के अभाव में हम अपने विशाल बहुभाषी राष्ट्र में ही अपरिचित जैसे रह जाते। अनुवाद संपूर्ण राष्ट्र को एकता के बंधन में बांधने में सहायक रहा है।

2.6 सामासिक संस्कृति के विकास में अनुवाद का महत्व

संस्कृति अपने वृहत्तर अर्थ में पूरी मानव सभ्यता की उपलब्धियों का साझा कोष है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाओं का ही दूसरा नाम संस्कृति है। भारत जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक देश में एक साथ इतनी संस्कृतियों, धर्मों और आचार–विचारों का समन्वय हुआ है कि इस देश में संस्कृति का एक समन्वित और मिश्रित स्वरूप अब स्थिर हो गया है। जिस तरह सागर अनंत नदियों की जलराशि को समाहित कर विशालता अर्जित करता है, उसी तरह भारतीय संस्कृति ने भी कई चिंतनधाराओं, कई विचारशैलियों और न जाने कितनी व्यवहारगत असमानताओं को अपने भीतर पचा कर अनूठी समन्वयात्मकता का परिचय दिया है। भारत की इस बहुआयामी संस्कृति को ही सामासिक संस्कृति कहा गया है, जिसमें चिंतन, सृजन, भाषा, कल्पना और आचरण की तमाम विभिन्नताओं के बावजूद एक अद्‌भुत सामासिकता लक्षित होती है। भारतीय जनजीवन में व्याप्त अनेकता में विद्यमान एकता ही इस सामासिक संस्कृति की मूलभूत विशेषता है। भारतीय संस्कृति में भारत की विविधताएँ अपनी संपूर्ण मौलिकता के साथ गुँथी हुई है। सामासिक संस्कृति की इस समन्वयात्मक चेतना का विकास करने में अनुवाद का विशेष महत्व है। अनुवाद के बिना हम कैसे जान पाते कि मौजूदा भारतीय साहित्य और चिंतन किन दिशाओं में अग्रसर है। राष्ट्रीय स्तर पर सोच और अभिव्यक्ति की दशा–दिशा की जानकारी अनुवाद के बिना संभव ही नहीं।

मध्यकालीन पुनर्जागरण से लेकर बीसवीं सदी के नवजागरण तक भारतीय संस्कृति की सामासिकता अधिक तीव्र हुई है। आर्य–अनार्य, देशी–विदेशी संस्कृतियों का घोर समन्वयात्मक चरित्र ही मौजूदा भारतीय संस्कृति के रूप में सामने आया है। यह स्वाभाविक ही है कि भारत की सामासिक संस्कृति को उसकी संपूर्णता में परखा जाए। आज हम भारत के किसी स्थान विशेष की आचार–व्यवहारगत आदतों तक सीमित नहीं रह सकते हैं व्यवहार की विविधता, चिंतन की स्वतंत्रता, सामाजिक संघर्ष और

उदारवादी दृष्टिकोण के कारण सामासिक संस्कृति का लगातार विस्तार हुआ है। भारतीय संस्कृति की सामासिक चेतना को अनुवाद के अनगिनत प्रयासों ने सौष्ठव प्रदान किया है। अनुवाद से भारत की बहुआयामी सांस्कृतिक परंपराओं और उपलब्धियों पर विचरण करने वाली विभिन्न धार्मिक–वैचारिक संप्रदायों, आचार–दर्शनों और सांस्कृतिक सरणियों का संगम हुआ है। समूचे देश की भौगोलिक सीमा में बिखरी सांस्कृतिक विरासतों और जीवनमूल्यों की सामासिक छवि को अनुवाद–प्रक्रिया ने सही दिशा दी है।

2.7 भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व

भारतीय साहित्य का इतिहास विश्व भर में अत्यधिक प्राचीन, श्रेष्ठ और कलामय है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के वैदिककाल से लेकर अब तक भारत की अनगिनत भाषाओं और बोलियों में चिंतन और सृजन की सुदीर्घ परंपरा उपलब्ध है। लेकिन, भारतीय साहित्य का तात्पर्य केवल विविध भाषाओं का रचनात्मक समुच्चय नहीं है, अपितु भारतीय साहित्य इस बहुभाषी और वैविध्यपूर्ण देश की सामासिक संस्कृति का समेकित प्रयास भी है। इसी कारण अब साहित्य का इतिहास मात्र हिंदी या बंगला या मराठी या तेलुगु की साहित्यिक उपलब्धियों के विवरण से नहीं तैयार हो सकता है। साहित्य के इतिहास को अब वृहत्तर भारतीय साहित्य के समेकित इतिहास के रूप में रूप में ही सही पहचान दी जा सकती है। अकेले सूरदास की चर्चा अब अपर्याप्त होगी। सूरदास के साथ गुजराती के नरसी मेहता, तेलुगु के मोतना, उड़िया के जगन्नाथ दास, असमिया के शंकरदेव, कन्नड़ के पुरंदरदास और बांग्ला के चंडीदास आदि कृष्णभक्त कवियों की प्रासंगिक चर्चा अपरिहार्य होगी। हिंदी में जैसी छायावादी कविताएँ लिखी जा रही थीं, बांग्ला, मलयालम, पंजाबी, सिंधी, उर्दू, गुजराती, तेलुगु, मराठी आदि तमाम भारतीय भाषाओं में उससे मिलते जुलते भाव और सौंदर्य पर आधारित स्वच्छंदतावादी काव्य रचा जा रहा था। लेकिन मलयालम से अपरिचित काव्य रसिक के लिए कठिन है कि वह कुमारन आशान् की भाववादी कविताओं से जुड़े। जो मराठी नहीं जानता, वह विजय तेंदुलकर के नाटकों और कुसुमाग्रज की कविताओं का रसास्वादन नहीं कर सकता। जो हिंदी नहीं जानता, वह प्रेमचंद की कहानियों और हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों से अनिभिज्ञ ही रह जाएगा। भाषा–ज्ञान के बिना भारत की विभिन्न भाषाओं में शताब्दियों में रचित साहित्य की उपलब्धियों से परिचित होना असंभव है। इसी असंभव को संभव बनाने में अनुवाद की उपादेयता कारगर होती है। अन्य भाषा के ज्ञान की कमी अनुवाद से पूरी होती है। संपूर्ण भारतीय भाषाओं के साहित्य की विचार सामग्री और कलत्मक गरिमा का परिबोध अपनी ही भाषा में मिल जाए, यह अनुवाद का चमत्कार है। अनुवाद के ही कारण तुलसी और कंबन, प्रेमचंद और शरतचंद्र, कबीर और वेमना, मीरा और अंडाल, कालिदास और वाल्मीकि, भारतेंदु और नर्मद, दिनकर और इकबाल, वृंदावन लाल वर्मा और हरि नारायण अप्टे, उमाशंकर जोशी और अज्ञेय आदि भारतीय रचनाकारों से सारा हिंदुस्तान परिचित है। अनुवाद के ही कारण वल्लतोल पर मलयालम भाषियों को ही गर्व नहीं, रवींद्रनाथ ठाकुर केवल बंगला के रचनाकार ही नहीं, कबीर केवल हिंदी के विद्रोही कवि नहीं और गालिब पर केवल उर्दू शायरी के प्रेमी ही मुग्ध नहीं हैं। भारतीय साहित्य की अनमोल उपलब्धियाँ अनुवाद के कारण भाषा और देश–काल की सीमा में बँधी हुई नहीं है। स्वभावतः भारतीय साहित्य के अध्ययन और आस्वादन में अनुवाद की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

इधर भारतीय साहित्य के समेकित इतिहास का अध्ययन लोकप्रिय हुआ है। सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययन और अनुसंधान अनुवाद के बिना संभव नहीं। अनुवाद ने ही भारतीय साहित्य के समेकित अध्ययन और अध्यापन को व्यापकता दी है तथा सुगम बनाया है। भारतीय साहित्य को उसकी समग्रता और विविधता में जानने और आँकने का सारा मौजूदा व्यापार अनुवाद पर ही अवलंबित है। अनुवाद में भारतीय साहित्य के अध्येताओं को एक दूसरे के निकट लाने का सम्यक् प्रयास किया।

2.8 विश्वसाहित्य के अध्ययन–अध्यापन में अनुवाद का महत्व

भारत में ब्रिटिश राज की स्थापना के बाद भारतीय मनीषा का व्यापक संपर्क पश्चिमी चिंतन और सृजन के साथ हुआ। इसके पूर्व सूफियों ने अरब देशों की दार्शनिक अभिव्यक्तियों से भारतीय साहित्य को जोड़ना चाहा था, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि और रुचि का व्यापक समाहार भारत में यूरोपीय शक्तियों के आगमन के बाद ही हुआ। पहले ईसाई धर्म प्रचार के बहाने और फिर शैक्षणिक तथा प्रशासनिक कार्यों के लिए यूरोपीय भाषाओं से भारतीय भाषाओं में अनुवाद का उपयोग प्रारंभ हुआ। कहा जाने लगा कि जिस भारतीय भाषा में अच्छे अनुवादक न हों, उसमें नए, और मौलिक ग्रंथों के लेखक कहाँ मिलेंगे? एक श्रेष्ठ और मानक अनुवाद पर पचास निःसार मौलिक पुस्तकें न्यौछावर करने की मानसिकता पनपने लगी। परिणामतः हिंदी और समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में अंग्रेजी भाषा में संचित ज्ञान और कला का अनुवाद होने लगा।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 1880 में विलियम शेक्सपियर के नाटक *'मर्चेंट ऑफ वेनिस'* का अनुवाद *'दुर्लभ बंधु'* के रूप में किया और श्रीधर पाठक ने 1886 में ऑलिवर गोल्डस्मिथ की काव्यकृति *'हरमिट'* का अनुवाद *'एकांतवासी योगी'* के नाम से किया। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से हिंदी एवं उसकी सहवर्ती भारतीय भाषाओं में अनुवाद के पिछले लगभग सवा सौ वर्षों के इतिहास में अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के साथ भारतीय लेखकों, पाठकों एवं अध्येताओं का रिश्ता प्रगाढ़ हुआ।

यह अनुवाद का ही चमत्कार है कि अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन और अध्यापन भारतीय भाषाओं में संभव हुआ है। अनुवाद के कारण ही हम टॉल्स्टॉय के उपन्यासों और शेक्सपियर के नाटकों से परिचित हुए हैं। अनुवाद के माध्यम से कामू, सार्त्र और बैकेट से लेकर पाब्लो नेरूदा और नादीना गार्डिनर तक की रचनाओं से भारतीय पाठक लाभान्वित हैं। अनुवाद ने न केवल पाठकीय रुचि को अंतर्राष्ट्रीय आस्वाद प्रदान किया है, बल्कि अध्ययन और अनुसंधान को नई दिशाएँ भी दी हैं। अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन हमें अतीत और वर्तमान के विश्व से परिचित कराता है। सारे संसार की विभिन्न भाषाओं में विभिन्न विधाओं में रचे जा रहे साहित्य के अध्ययन में संलग्न अध्येताओं के शिक्षण में भी अनुवाद की विशिष्ट भूमिका लक्षित होती है। वास्तविकता तो यह है कि अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन और अध्यापन अनुवाद के बिना संभव नहीं है। अनुवाद के कारण ही विश्व साहित्य का समग्र स्वरूप किसी भी भाषा में साकार हुआ है। ऐसा विश्व की किसी भी भाषा के साहित्य के संदर्भ में कहा जा सकता है। *'अभिज्ञानशाकुंतलम्'* को पढ़कर जर्मन कवि गेटे अनुवाद के कारण ही चमत्कृत हो सके थे। अनुवाद के आधार पर ही शापेनहावर और टी.एस. इलियट के सामने भारतीय उपनिषदों का संसार उजागर हुआ। निश्चय ही अनुवाद के कारण अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में सुगमता और व्यापकता आई है।

2.9 तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व

विश्व में एकता और सामासिकता की कड़ियों को जोड़ने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन। तुलना की प्रवृत्ति ने मनुष्य के ज्ञान और कौशल को सर्वदा ही हर क्षेत्र में विस्तार दिया है। साहित्य के अध्ययन की तुलनात्मक प्रविधि भी मनुष्य के चिंतन और सृजन की एक विशिष्ट प्रक्रिया है। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा साहित्य की ऐसी विशेषताओं का उद्‌घाटन हो जाता है, जो सामान्य अध्ययन द्वारा प्रकाश में नहीं आ पाती। तुलनात्मक अध्ययन एकाधिक भाषाओं और साहित्यों के परस्पर संपर्क को बढ़ाता है। विभिन्न सर्जनात्मक इकाइयों के परस्पर निकट आने की संभावनाओं को प्रोत्साहित करने के साथ ही साथ तुलनात्मक अध्ययन विविधता में एकसूत्रता के अंतर्दर्शन को उजागर करता है। दो भाषाओं के साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन करते समय लगातार ऐसा प्रतीत होता है कि दो भाषाओं के माध्यम से वस्तुतः एक ही सोच, एक ही संस्कृति को दो अभिव्यक्ति–माध्यमों से प्रस्तुत किया गया है। सूरदास और नरसी मेहता की कृष्ण भक्ति, रामचरितमानस और कृत्तिवास रामायण, भारतेंदु और वीरेश लिंगम पंतुलु, हिंदी और मराठी उपन्यास, दिनकर और इकबाल, फणीश्वरनाथ रेणु और सतीनाथ भादुड़ी हिंदी और पंजाबी संतकाव्य, केशवदास और श्रीनाथ, हिंदी और कन्नड़ भक्ति आंदोलन, महादेवी वर्मा और बालमणि अम्मा जैसे न जाने कितनी ही दिशाओं में तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधारन का विस्तार हुआ है। ऐसे तमाम अध्ययनों से यही प्रमाणित हुआ है कि विभिन्न राज्यों की भाषा–भूमियों पर प्रवाहित होने वाली भावधारा और विचार–सरिता एक ही है। इस निष्कर्ष पर पहुँच पाना अनुवाद के बिना संभव नहीं। वास्तविकता तो यह है कि अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन की आधारभूत धुरी हैं अनुवाद के सहारे ही एक भाषा को जानने वाले अन्य भाषा की सहित्यिक उपलब्धियों से परिचित होते हैं अनुवाद की सुविधा न होती तो हिंदी भाषी लोग शरतचंद्र, तुकाराम, वेमना, अकबर इलाहाबादी, वसवेश्वर, के.वी. पुटप्पा, ज्योतिंद्र दये, खांडेकर आदि अनगिनत भारतीय रचनाकारों की सर्जना से अपरिचित ही रह जाते। ठीक यही बात अन्य भारतीय भाषा–भाषियों की हिंदी साहित्य संबंधी जानकारी के संदर्भ में कही जा सकती है। अनुवाद के प्रसार ने तुलनात्मक अध्ययन को राष्ट्र की सीमा से बाहर निकालकर विश्व फलक तक पहुँचाया है। परिणामतः भारत के कबीर और फ्रांस के रैबले, हिंदी के प्रेमचंद और रूसी के मैक्सिम गोर्की, अज्ञेय और टी.एस. इलियट, निराला और एज़रा पाउंड, जयशंकर प्रसाद और विलियम शेक्सपियर आदि के तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद की सुविधा से संपन्न शोध एवं ज्ञान संपदा हैं।

तुलनात्मक अनुशीलनों से विभिन्न भाषाभाषियों का यह दंभ और भ्रम भी टूटता है कि उनकी भाषा का साहित्य ही अन्यतम है। समानताओं और विषमताओं का तुलनात्मक विवेचन यही स्थापित करता है कि किसी भी भाषा के साहित्य की खूबियाँ और खामियाँ वैचारिक एवं सर्जनात्मक स्तर पर कितनी सामासिक हैं। यह सब अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो सका है। अनुवाद के सहारे ही एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की परिकल्पना साकार हुई है। अनुवाद की सुविधा से तुलनात्मक अध्ययन के कारण मानव के सीमित ज्ञान क्षेत्र का विस्तार होता है। अनुवाद ने तुलनात्मक अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान को निश्चय ही व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है।

2.10 व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

व्यवसाय एवं रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व बहुत ही व्यापक है। एक ओर जहाँ यह अंतर्भाषायी क्षेत्र में व्यापार की दृष्टि से अपेक्षित होता है वहीं उद्योग के क्षेत्र में तकनीकी और औद्योगिकी जानकारी को प्राप्त करने और उसके उपयोग की दृष्टि से अपेक्षित होता है। किसी उद्योग विशेष से संबंधित नई जानकारी दुनिया की जिस किसी भषा में उपलब्ध हो उससे जब तक अपनी भाषा में न लाया जाए तब तक उसका औद्योगिक इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। मान लीजिए चीनी उद्योग से संबंधित कोई नई खोज जर्मनी में की जाती है, अब अमेरिका में उसका प्रयोग करने के लिएर उसे अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध कराना आवश्यक होगा। अनुवाद की इस अपरिहार्यता को देखते हुए बड़े औद्योगिक संस्थान तुरंत अनुवाद कराने की व्यवस्था अपने पास रखते हैं। ये संस्थान अपने बनाए माल को विभिन्न देशों अथवा प्रदेशों के बाजार में बेचने के लिए जो प्रचार साहित्य तैयार कराते हैं उसे भी कई भाषाओं में अनूदित कराते हैं। यद्यपि आज पूरी दुनिया में अंग्रेजी भाषा का प्रचलन है लेकिन विनिर्माता अपना माल उन लोगों तक भी पहुँचाना चाहते हैं जो अंग्रेजी भाषी नहीं है। जो वस्तुएँ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए बनाई जाती हैं उनकी प्रचार सामग्री का तो अनुवाद होता ही है। जो विशेष रूप से देश के भीतर व्यापार के लिए होती है उनकी प्रचार सामग्री को भी देश की विभिन्न भाषाओं में छापा जाता है। आपने कई बार किन्हीं दवाइयों अथवा अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के साथ उस वस्तु के विषय में जानकारी की पर्ची देखी होगी जिसे पाँच–सात भाषाओं में मुद्रित किया गया हो। ऐसा विभिन्न भाषा–भाषियों द्वारा उन वस्तुओं के उपयोग को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

2.11 पर्यटन के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

पर्यटन को भी आजकल उद्योग का दर्जा मिल गया है। इस क्षेत्र में अनुवाद का अत्यधिक महत्व है। पर्यटन का संबंध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों से होता है। इसमें यात्रा, आवास, मनोरंजन, मार्गदर्शन तथा पर्यटन स्थल संबंधी सूचना, प्रचार आदि शामिल होते हैं। इस क्षेत्र में अनुवाद के लिखित और मौखिक दोनों रूपों की आवश्यकता एवं उपयोगगिता रहती हैं देश–विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए परिवहन सुविधाओं में और होटल तथा यात्री निवास आदि पर तो अनुवादकों की आवश्यकता होती ही है। पर्यटकों के साथ जाने वाले गाइडों को कई भाषाओं में पर्यटन संबंधी जानकारी देनी पड़ती है। इसके साथ ही विशिष्ट पर्यटन स्थलों के बारे कमें छपी पुस्तिकाओं आदि को भी पर्यटकों की सुविधा के लिए कई भाषाओं में उपलब्ध कराना पड़ता है। रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों, मोटर वाहन स्थलों आदि पर अपेक्षित सूचना कई भाषाओं में प्रकाशित अथवा प्रसारित कराई जाती है ताकि पर्यटकों को असुविधा न हो। वास्तव में पर्यटन ऐसा उद्योग है जो निरंतर अनुवाद के सहारे चलता है। इसके साथ ही, पर्यटन के क्षेत्र में प्रचार के नवमाध्यमों ने न केवल प्रसार को सरल बनाया है, अपितु अनुवाद की सहायता से उसे और अधिक व्यापक बनाने में भी सहायता मिली है। प्रचार–प्रसार के पारंपरिक माध्यमों के अतिरिक्त इंटरनेट, पॉडकास्ट, ऑडियो टेक्स्ट, पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध ऑडियो–वीडियो जानकारी को अनुवाद की सहायता से ही विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध करवाया जाना सुगम हुआ है।

2.12 प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

स्वतंत्र भारत को प्रशासन व्यवस्था का ढाँचा ब्रिटिश राज से मिला है। अंग्रेजों के बनाए नियम कानून आदि सभी अंग्रेजी में थे। साथ ही प्रशासनिक कार्य में लगे अधिकारी–कर्मचारी वर्ग को भी अंग्रेजी में ही काम करने की आदत थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किए जाने के बावजूद प्रावधान यह है कि अंग्रेजी को सह राजभाषा के रूप में तब तक उपयोग में लाया जा सकता है जब तक कि सभी कार्यालयों के अधिकारी व कर्मचारी हिंदी नहीं सीख लेते। वर्तमान में प्रशासनिक स्तर पर द्विभाषिक स्थिति चल रही है। द्विभाषिकता के कारण नए बनने वाले नियम कानून तथा आदेश, परिपत्र, संधि, करार, रिपोर्ट आदि द्विभाषिक प्रस्तुत किए जाते हैं। अंग्रेजी में पहले तैयार करके उनका हिंदी अनुवाद किया जाता है। इस तरह अनुवाद प्रशासनिक क्षेत्र की अनवरत प्रक्रिया बन गया है। प्रत्येक दस्तावेज़ द्विभाषिक तैयार होना है इसलिए उसका अनुवाद करना अपेक्षित होता है।

सरकारी कार्यालयों के अलावा सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों, निगमों, कंपनियों, बैंकों आदि को भी अपने प्रशासनिक कार्यों में सरकारी भाषा नीति का पालन करना आवश्यक है, अतः वहाँ भी अनुवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती है। केंद्र और राज्य सरकार के बीच प्रशासनिक कार्यों के लिए भी अनुवाद की जरूरत पड़ती है विशेष रूप से गैर हिंदी भाषी राज्यों के मामले में।

प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद प्रमुख रूप से अंग्रेजी से हिंदी में होता है। आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत अनुवाद हिंदी से अंग्रेजी में भी किया जाता है। इस क्षेत्र में अनुवाद का महत्व यही है कि वर्तमान परिस्थितियों में यह एक अपरिहार्य है।

2.13 जनसंचार माध्यमों में अनुवाद का महत्व

तकनीकी आविष्कारों ने इक्कीसवीं शताब्दी के द्वार पर दस्तक दे रहे विश्व को जनसंचार माध्यमों के विलक्षण मायालोक में खड़ा कर दिया है। पत्रकारिता, विज्ञापन, अकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र, कंप्यूटर, दूरभाष, कृत्रिम उपग्रहों और नव्यतम संचार तकनीकों ने मनुष्य को सूचनाओं से अधिकाधिक लैस करने के साथ ही संसार की बहुमुखी प्रगति में अपनी नई भूमिका तय की है। जीवन की गति को प्रामाणिक करने वाले सबसे जीवंत और कारगर साधन येर संचार माध्यम ही है। विज्ञान, वाणिज्य, उद्योग, शिक्षा, प्रशासन और आर्थिक गतिविधियों में सर्वत्र ही संचार सक्रिय है। देश और काल की दूरियों को समाप्त करते हुए इन संचार माध्यमों ने संपूर्ण विश्व को एक दूसरे के निकट पहुँचाने का कार्य किया है।

संचार माध्यमों के अंतर्गत दोनों तरह के माध्यम आते हैं प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। संचार माध्यमों की कार्य प्रणाली में अनुवाद का अपरिहार्य महत्व है। दुनिया के कोने–कोने से एकत्र सूचना को पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों तक उनकी भाषा में पहुँचाने में अनुवाद ही माध्यम बनता है। समाचार एजेंसियाँ कुछ प्रमुख भाषाओं में समाचार प्रस्तुत करती हैं। अखबार, रेडियो और टेलीविजन उन्हें अपनी जरूरतों के अनुसार भाषांतरित कराते हैं। इन माध्यमों के अपने अनुवाद विभाग होते हैं जो बहुत त्वरित गति से अनुवाद प्रस्तुत करते है। समाचारों के अतिरिक्त सूचनाओं, विज्ञापनों, संदेशों आदि के अनुवाद भी प्रस्तुत किए जाते हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में संचार माध्यमों को विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में समाचार तथा महत्वपूर्ण सूचनाओं का अनुवाद

कराना पड़ता है। कहना चाहिए कि इन माध्यमों का तंत्र काफी कुछ हद तक अनुवाद पर आश्रित होता है। लिखित अनुवाद के अलावा बहुत से कार्यक्रमों में रूपांतर आशु अनुवाद भी चलता है। उदाहरण के लिए चुनाव के उपरांत परिणाम आते समय दूरदर्शन द्वारा प्रस्तुत चुनाव विश्लेषण में विदेशी मेहमानों के समय उनके स्वागत कार्यक्रम को प्रस्तुत करते समय।

इन माध्यमों पर होने वाले अनुवाद की विशेषता यह है कि इसमें स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की भूमिका समय–समय पर बदलती रहती है कभी अंग्रेजी स्रोत भाषा होती है तो कभी लक्ष्य भाषा। कभी–कभी यह अनुवाद एक से अधिक भाषाओं में साथ–साथ प्रस्तुत किया जाता है। सूचना क्रांति के इस युग में जनसंचार के पारंपरिक माध्यमों के साथ–साथ नए माध्यमों – सोशल मीडिया, इंटरनेट, फेसबुक, बलॉग, ट्विटर आदि की प्रसिद्धि के साथ–साथ जनसंचार में अनुवाद की उपयोगिता और अधिक प्रासंगिक हुई है।

2.14 शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व स्वतः स्पष्ट है। हम चर्चा कर चुके हैं कि देश–विदेश के ज्ञान–विज्ञान से परिचय प्राप्त करने के लिए अनुवाद की जरूरत पड़ती है और पड़ती रहेगी। इसके साथ ही विभिन्न देशों और समाजों के प्राचीन ज्ञान – उन भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान जो अब बहुत प्रचलन में नहीं है – तक पहुँचने के लिए अनुवाद वाहक का कार्य करता है। प्राचीन लेखकों की कृतियों को हम अनुवाद के माध्यम से ही पढ़ते हैं।

अनुवाद का महत्व शिक्षा माध्यम की दृष्टि से बहुत व्यापक है विशेष रूप से उन देशों में जहाँ एक से अधिक भाषाओं के माध्यम से दी जाती है। भारत में विभिन्न प्रादेशिक भाषाएँ शिक्षा का माध्यम हैं। हिंदी अंग्रेजी के अलावा उड़िया, बांग्ला, असमिया, तमिल, तेलुगु आदि के माध्यम से बच्चा स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक प्राप्त करता है। बहुभाषी समाज में शिक्षा की व्यवस्था में अनुवाद की जरूरत पड़ती है क्योंकि इसके माध्यम से पाठ्यसामग्री का स्तर समानांतर रखा जा सकता है तथा सामग्री जल्दी तैयार की जा सकती है।

भाषा शिक्षण में भी अनुवाद विशेष महत्व रखता है। जो भाषा छात्र को सीखनी है उसे छात्र की अपनी मातृभाषा के साथ तुलनात्मक रूप में रखते हुए दोनों भाषाओं के बीच अनुवाद कराया जाता है। इस प्रक्रिया में छात्र भाषा के नियमों को भलीभाँति सीख लेता है और धीरे–धीरे उस भाषा को स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल करने में लगता है। अधिक प्रयास के बाद स्थिति यह आती है कि छात्र दूसरी भाषा को भी मातृभाषा के समान बोलने और लिखने लगते हैं।

2.15 सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आई क्रांति ने पूरे विश्व को सूचनाओं से भर दिया है। विभिन्न तकनीकी उपकरणों के माध्यम से हमें अनेक सूचनाएँ मिलती रहती हैं। आज पूरे विश्व में व्यापक स्तर पर सूचनाओं का आदान–प्रदान चल रहा है जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर व्यापार, पर्यटन, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में नित नए शोध और ज्ञान के आयाम जुड़ रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी ने

पूरे विश्व को एक गाँव में बदल कर रख दिया है जहां बड़ी ही सुगमता से न केवल सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है अपितु प्रसार के नए आयाम भी खुलते हैं। विश्व में कितनी भाषिक विविधता के बावजूद यह काम आज उतना कठिन नहीं रह गया है। अनुवाद ने इस कार्य में सक्रिय एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मशीनी अनुवाद के आगमन ने अनुवाद को गति प्रदान की है जहां बहुत सरलता से सूचना प्रधान साहित्य का अनुवाद संभव है। भूमंडलीकरण के इस दौर में सूचना प्रौद्योगिकी तथा अनुवाद के बीच तालमेल के कारण भाषिक बाधाएँ कम हो रही हैं। विश्व भर में होने वाली घटनाएँ तथा उपलब्धियाँ हमें अपनी भाषा या सीखी हुई भाषा में प्राप्त हो जाती हैं। इस दृष्टि से अनुवाद की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

2.16 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने अनुवाद की आवश्यकता और महत्व के विषय में जाना। अनुवाद के महत्व के विषय में जानकारी हासिल करते हुए अब आप जान गए हैं कि अनुवाद मात्र एक साहित्यिक कार्य नहीं है, अपितु उसकी पहचान जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिया साधन के रूप में उभरी है। प्रशासन, चिकित्सा, कला, संस्कृति, विज्ञान, प्रतिरक्षा, विधि, प्रौद्योगिकी, तकनीकी अनुसंधान, व्यवसाय, पत्रकारिता, जनसंचार आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के बिना कार्य करना कठिन होगा। भारत जैसे बहुभाषी और विविधताओं से भरे देश में राष्ट्रीय एकता के सूत्रों को समेटने में भी अनुवाद की अपनी विशिष्ट भूमिका है। भारत की सामासिक संस्कृति के अवगाहन में भी अनुवाद कारगर है। भारत एवं अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन–अध्यापन में अनुवाद की उपादेयता असंदिग्ध है। इसी तरह, साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान की विभिन्न दिशाएँ अनुवाद से ही नियंत्रित होती हैं। क्रमशः अनुवाद एक स्वतंत्र व्यवसाय एवं आजीविका का साधन बन गया है। ज्ञान–विज्ञान, औद्योगिक विकास और वाणिज्य–व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के व्यापक उपयोग ने इसे अधिकाधिक लोकप्रिय बनाया है। बहुभाषी देश भारत में बहुभाषी शिक्षा प्रणाली की संभावनाओं के साथ भी अनुवाद का गहरा रिश्ता है। इन सबने मिलकर अनुवाद की विश्वव्यापी, उपादेयता, प्रासंगिकता और भविष्य को रेखांकित किया है। जीवन की हर दशा में अनुवाद की प्रासंगिकता प्रमाणित हो चुकी है। आने वाले दिनों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फलक पर अनुवाद का महत्व उत्तरोत्तर विस्तृत होगा। अनुवाद आज की आवश्यकता है और भविष्य की अपरिहार्य के रूप में अनुवाद की संभावनाएँ असीम हैं। विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की उपादेयता एवं प्रासंगिकता के विषय में आप प्रस्तुत कार्यक्रम की विभिन्न इकाइयों के माध्यम से और विस्तार से जान पाएँगे।

2.17 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
2. विविधता में एकता की स्थापना में अनुवाद के प्रयास का भारतीय संदर्भ में मूल्यांकन कीजिए।
3. सामासिक संस्कृति के विकास में अनुवाद के अवदान का विवेचन कीजिए।
4. भारतीय साहित्य के अध्ययन–अध्यापन में अनुवाद की भूमिका का वर्णन कीजिए।
5. तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद का महत्व बताइए।

6. व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालिए।
7. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
8. जनसंचार माध्यमों में अनुवाद के महत्व को रेखांकित कीजिए।
9. शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका बताइए।

2.18 उपयोगी पुस्तकें

- तिवारी, डॉ. भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान, शब्दकार, दिल्ली।
- अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
- अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ, डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव और डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
- पालीवाल, डॉ. रीतारानी, अनुवाद प्रक्रिया, साहित्यनिधि, दिल्ली।
- अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग, संपा. डॉ. नगेंद्र, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग, डॉ. जी. गोपीनाथन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- भाटिया डॉ. कैलाश चंद्र, अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
- अनुवाद कला, एन.ई. विश्वनाथ अय्यर।
- Savory Theodore, The Art of Translation, Jonathan Cape, London.
- Newmark Peter, The Theory and Craft of Translation, Language Teaching and Linguistics Abstracts 9.1-5-26.
- Newmark, Peter, Approaches to Translation, Pergamon Press, Oxford. 1981
- Bassnett, Susan Translation Studies, McGuire, 1980, Metheun: London & New York.
- A Linguistic Theory of Translation, Catford J.C., Oxford University Press, London.
- The Theory and Practice of Translation, Nida, E.A. and C. Taber, E.J. Brill, Leiden.